International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-12-2020; Accepted: 30-12-2020; Published: 23-01-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 32-35

कबूतरा जनजाति का नारी संघर्षः मैत्रेयी पुष्पा की 'अल्मा कबूतरी' के संदर्भ में

करबी देवी

सहायक अध्यापक, हिन्दी विभाग, नगाँउ महाविद्यालय, असम, भारत

सारांश

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास बुंदेलखंड की कबूतरा जनजाति के माध्यम से समाज में 'जन्मजात अपराधी' घोषित की गई तमाम जनजातियों का दस्तावेज प्रस्तुत करता है। सजा के तौर पर सन् १८७९ ई. के अधिनियम के तहत अंग्रेजों ने इस जनजाति को 'जन्मजात अपराधी' घोषित कर दिया था। यह प्रथा आज तक चली आ रही है। उपन्यास स्त्री शोषण तथा स्त्री संघर्ष का कटु यथार्थ है जिसे गहरी संवेदना तथा जबर्दस्त सृजनात्मकता के साथ से बुना गया है। बस्ती की सबसे पहली माँ ने भूरी बेटे को कुल्हाड़ी-डंडा नहीं थमा कर पोथी-पाटी पकड़ाया। अपने बेटे को सभ्य बनाने के लिए भूरी कबुतरा जीवन तथा बदनामी का बोझ ढ़ोने को तैयार थी। पर ऐसा नहीं हो पाता। भूरी का बेटा रामसिंह कबूतरा बनकर ही जीने को अभिशप्त है। वह धीरे-धीरे अपनी संघर्ष की क्षमता खोकर पुलिस का दलाल बन जाता है और बेटा सिंह डाकू के नाम पर पुलिस द्वारा प्रायोजित मुठभेड़ में मारा जाता है। एक कबूतरा के 'सभ्य' बनने की कोशिश का यह 'नग्नतम' रूप है। सामजिक सरोकार के लिए विद्रोहिणी अल्मा हार नहीं मानती। अपने पिता के साथ रहती है, अपने साथ रहते राणा को बच्चे से मर्द बनाती है। कुँआरी माँ बनने का साहस दिखाती है, आततायियों को साहस के साथ झेलती है, पशुओं से भी बदतर जिंदगी जीने को बाध्य होती है। भूरी, कदमबाई तथा अल्मा एक समुच्चय है, जिसमें तमाम अन्य स्त्री पात्र भी सिमट जाते हैं। इस तरह कुल एक ही स्त्री मूर्ति प्रतिष्ठित होती है 'अल्मा'। ये तीनों हीं स्त्रियाँ महाकाल से टकराने में सक्ष्म हैं। पर पग-पग पर उत्पीड़ित होती हैं, उनका एक-एक सपना टूटता जाता है फिर भी वे चुनौतियों से टकराती हुई संघर्ष करती है। अल्मा जितना संघर्ष करती है, अंतत: वह एक मुकाम हासिल कर लेती है। इस प्रकार वह किसी जनजाति विशेष की नहीं रह जाती। उसकी आशा-आकांक्षा और जिजीविषा जाति से भी आगे जाकर लिंग भेद तक को लाँघ जाती है।

मूलशब्द: कबूतरा जनजाति का नारी संघर्ष, अल्मा कबूतरी, जन्मजात अपराधी

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य जगत में मैत्रेयी पुष्पा एक सफल उपन्यासकार है। वर्तमान युग में उनके नाम के बिना साहित्य का जगत अधुरा–सा लगता है। मैत्रेयी पुष्पा को ग्राम्य जीवन की लेखिका भी कहा जाता है। क्योंकि पुष्पा जी ने साहित्य की रचना शैली वातानुकूलित कमरे में बैठकर नहीं किया है। वरन् स्वयं जीवन की सरलता का अनुभव करते हुएखेत खलिहानों में जाकर अपने कालजयी साहित्य का सृजन किया।

मैत्रेयी पुष्पा जी का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में बुन्देलखण्ड की कबूतरा जनजाति और उनके

कबूतरा समाज का सम्पूर्ण सजीव चित्रण प्रतिफलित होता है।उपन्यास में कबूतरा जनजाति के पति-पत्नी के बीच का संबंध, प्रेम, मुहबत, दण्ड, झगड़े–फसाद, करूण एवं भाराक्रांत जीवन सहित सभ्य समाज के लोगों द्वारा अपमान, अवहेलना और कबूतरा नारी की श्लीलता हानि जैसे जघन्य अपराधोंके नग्न रूप का बहुत ही वास्तविक चित्रण किया गया है।

अल्मा कबूतरी उपन्यास की एक और खासियत है– स्त्री विमर्श। इक्कीसवीं सदी के हिन्दी साहित्य जगत ने स्त्री विमर्श थीम पर एक उल्लेखनीय स्थान को घेर लिया है। स्त्री विमर्श द्वारा नारी के ऊपर विभिन्न प्रकार की आलोचना एवं विचार–विमर्श करके उन्हें अंधकाररूपी गटर से आलोकित पथ पर कैसे अग्रसारित किया जा सकता है, उपन्यास में इसी पर आलोकपात किया गया है। साथ ही उनकी मानसिकता का किस प्रकार उत्कर्ष साधन किया जा सके–इस पर भी प्रयास जारी है। पुष्पा जी ने अपने तमाम उपन्यासों एवं कहनियों में सबल नारी मानसिकता का रूप का बड़ी बेबाकी से चित्रण किया है। अल्मा कबूतरी उपन्यास इन्हीं बातों का एक जीवंत मिसाल बन गया है।

उपन्यास में 'अल्मा' कबूतरा जनजीति की लड़की होकर भी अनेक दुख पीड़ाओं को सहकर जीवन युद्ध का संघर्ष करते हुए आगे बढ़ती है। हालात कैसे भी क्यों न हों आँखों से आँसू टपकाने के बजाय, छाती में एक मशाल जलाये लक्ष्य की ओर बढ़ती होती है। जीवन संग्राम में लड़ते-लड़ते अल्मा थक जाती है फिर भी हार मानना जैसे उसने कभी सीखा ही न हो। कबूतरा जनजाति रानी लक्ष्मीबाई और राणा प्रताप को अपना पूर्वज मानते थे। मगर आजपूर्वजों की वह शौर्य-वीर्य जैसे म्लान हो गया हो। प्रतिदिन जीवित रहने के लिए उन्हें जी–तोड़ मेहनतऔर संघर्ष करना पड़ता है। खासकर कबूतरा स्त्रिओं का प्रतिदिन का श्रम और संघर्ष अत्यंत भयानक और दर्दभरा है। क्योंकि अंग्रेज शासन दौरान कबूतरा जनजाति को 'अपराधी' जाति घोषित कर दिया गया था। और उन्हें 'जरायमपेशा' अर्थात समाज में वर्गछूत अपराधी जाति करार दिया गया था। अंग्रेजी 'राजपत्र' में भी इन्हें 'अपराधी दल' या सर्कस जनजाति कहा गया था। मगर सत्यता यह नहीं थी। कबूतरा जनजाति के लोग भी हाड़-मांस के ही बने हुए थे। जिन्हें आजादी से जीने और शिक्षा का अधिकार प्राप्त करने का भी अधिकार था। 'अपराधी जनजाति' के श्रेणी में रखने के कारण इन्हें कहीं मजूरी भी नहीं मिलती। काम के अभाव के कारण इन्हें दो जून की रोटी भी मिलना कष्टकर हो जाता था। फलत: ये चोरी-डकैती करने पर मज़बूर हो जाते।घर की औरतें घर में ही शराब बनाती या शराब की भट्टी में काम करती। औरतें पेट की भूख के मारे अपना शरीर भी बेचती है। इनकों अछूत कहकर सभ्यसमाज से कोसों दूर रखा जाता था। (वर्तमान भारत सरकार ने इस जनजाति को अपना न्याय और मर्यादा प्रदान किया है।)

उपन्यास की नायिका 'अल्मा' कबूतरा जनजाति की एक शिक्षित और सभ्य स्त्री थी। पिता रामसिंह ने उसे बहुत ही लाड-प्यार से बड़ा किया था। उनके घर में ही आश्रित राणा नामक युवक के साथ अल्मा का धीरे-धीरे प्रेम-संबंधबन जाता है। मगर एकदिन अचानक पुलिस आकर अल्मा के पिता रामसिंह की हत्या कर देती है। इस घटना के पश्चात ही डरपोक राणा अल्मा को छोड़कर भाग जाता है। अल्मा के जीवन में घनघेर अंधेरा छा जाता है। आश्रयहीना अल्मा को अंकशायिनी बनाने के लिए सभ्य समाज के लोगों के बीच जैसे प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाती है। बेचारी अल्मा दुर्जनसिंह और सुरजभान जैसे राक्षस के हाथों से बचकर अंत में श्रीराम नामक डाकू के पास जाती है। डाकू श्रीराम का दूसरा परिचय है–

समाज-कल्याण विभाग के मंत्री श्रीराम शास्त्री। श्रीराम शास्त्री स्वयंको आत्मसमर्पण करके राजनीति की गद्दी पर बैठने वाला मंत्री था। इसी श्रीराम शास्त्री के पास जाकर अल्मा बंदीनी बंन जाती है। क्योंकि उसे पता चल चुका था कि श्रीराम शास्त्री अल्मा जैसी असहाय लड़की की कल्याण करने के बजाय उसकी राक्षस की तरह बोटी-बोटी नोचना चाहता है।

श्रीराम शास्त्री के घर में रहकर अल्मा को नाना प्रकार की शारिरिक और मानसिक यातनायें मिलीं। परिस्थिति के साथ लड़ती-झगड़ती अल्मा मोम से पिघलकर पत्थर बन गयी। पत्थर दिल की अल्मा को धीरे-धीरे किसी भी प्रकार की यंत्रणा भी टस से मस न कर सकी थी। मन ही मन अल्मा ने विचार किया या तो आत्महनन या फिर हत्या। क्योंकि वह जाए तो कहाँ जाए! फिर से पकड़कर यही नरक में ले आएंगे उसे। अत: धीरे-धीरे वह आत्मसमर्पण करने में ही अपनी समझदारी मानने लगी। और उस मौके की तलाश करती रही जिस दिन श्रीराम शास्त्री जैसे राक्षस को अपनी हाथों से जिंदगी भर के लिए सुला देगी। अल्मा के मन में विभिन्न प्रकार के तर्क, अपराध–बोध और चिंताएं सागर की लहरों की भाँती हिल्लोरें लेती रहीं। इसके साथ ही अपनी करूण और दयनीय दशा से ग्रसित कबूतरा जाति की उद्धार एवं मर्यादा प्रदान हेतु उसके मन में हरदम विचार मंडराने लगे थे। इसलिए अल्मा स्वयं को बलिदान देकर भी निर्दोष पिता रामसिंह को न्याय दिलाने और कबूतरा जाति पर लगाये गये इल्जाम और अत्याचार को मिटा देना चाहती थी। वह श्रीराम शास्त्री पर बदला भी लेना चाहती थी जिसने उसे इस तरह बेहाल कर दिया था। श्रीराम शास्त्री ने अल्मा को नज़रबंन्दी बनाकर रखा था। अल्मा को उसकी इज़ाजत के बिना कहीं भी जाने की और कुछ करने की अनुमति नहीं थी। समाज भी अल्मा और श्रीराम शास्त्री के संबंध को लेकर अनेक मुखबोली कहानियाँ बना रहा था। इसलिए अल्मा ने मौके का फायदा उठाया और श्रीराम शास्त्री के साथ समझौता किया। उसने स्वयं को श्रीराम शास्त्री की पत्नी बताकर अल्मा शास्त्री उपाधि लिखना शुरू कर किया। जिस शरीर की आत्मरक्षा हेतु अल्मा डर के मारे हाहाकार कर रही थी, उसी शरीर को उसने अपना अस्त्र बनाया और अपना अधिकार जताना शुरू कर दिया। उपन्यास के अंत में श्रीराम शास्त्री की हत्या कर दी जाती है। अल्मा पत्नी के रूप में उसकी मुखाग्नि करती है। स्थानीय आम लोग अल्मा पर सहानुभूति दिखाते हैं और अल्मा मीडिया की केंद्रबिंदु बन जाती है। स्वयं को समाज कल्याण विभाग की उम्मीदवार भी घोषित कर देती है। उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा जी ने कबूतरा स्त्री के संघर्ष को मूल प्रतिपादक बनाया है। अल्मा कबूतरा जनजाति की लड़की थी। पिता रामसिंह ने उसे पढ़ा-लिखाकर सभ्य समाज का संस्कार देकर बड़ा किया था। मगर इतना संस्कार और शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी दुर्भाग्य से सभ्य समाज उसे ग्रहण करने में अस्वीकार करता है। अल्मा की पीठ पर कबूतरा जनजाति का लेबल इस प्रकार चिपका दिया जाता है कि वह चाहकर भी उसे मिटा नहीं पाती। अपनी इच्छाओं के विरूद्ध उसे अनेक सभ्य पुरूषों ने जोर जबरन अंकशायनी बनाया। बाद में इसी कमजोरी को अल्मा ने अस्त्र बनाया और स्वयं का उद्धार किया। श्रीराम शास्त्री से जबरदस्ती पत्नी का मर्यादा लेकर शास्त्री उपाधि भी ली और बाद में उसी को ढाल बनाकर स्वयं को प्रतिष्ठित करके अपनी जाति को प्रकृत न्याय दिलाया। अल्मा ने उसकी जैसी हजारों कबूतरा लड़कियों की मर्यदा को अक्षुण्ण रखनें में वह कामयाब हासिल की।

संदर्भ सूची

1. अल्मा कबूतरी- मैत्रयी, रामकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

2. खुली खिड़कीया- मैत्रयी पुष्पा, सामयिक प्रकाशन, 2007
3. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास- एक अनुशीलन ऋचा शर्मा, नमन प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2012
4. स्त्री विमर्श के कालजयी उपन्यास- डॉ. संजय गर्ग , सामयिक प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, 2092
5. भारत में स्त्री असमानता- गोपा जोशी, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित, आजादपुर, 2006